1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वदेवो महाँ असि।

– सामवेद 1026

हे विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।

O the Lord of the universe ! You are the Greatest of all.

वर्ष 42, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 सितम्बर, 2019 से रविवार 29 सितम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
एवं
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ
के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

दिनांक 11-12-13 अक्टूबर 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)
आश्विन शु० 13–14–15 विक्रमी सं० 2076

कार्यक्रम स्थल रामनाथ चौधरी शोध संस्थान-वाटिका
सुन्दर पुर मार्ग, नरिया, लंका, वाराणसी

* समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों – विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वैदिक धर्म महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट कर लें।
* इन तिथियों में कोई भी अपना कार्यक्रम आयोजित न करें। सभी आर्यजन अपना रेलवे रिजर्वेशन तत्काल करा लेवें।
* आर्यसमाज अपने कार्यक्रम के पत्रकों में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य प्रकाशित करें।
* सम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्यजन पंजीकरण हेतु अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि लिखकर aryasabha@yahoo.com, अथवा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।
* आर्यजनों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।
* ग्रुप में पधारने वाले आर्यजन ग्रुप लीडर के विवरण के साथ सूची बनाकर सम्पर्क करें- आवास (नि:शुल्क) अखिलेश आर्य 9451119659 (स:शुल्क) रविप्रकाश आर्य 9415389341

महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना सहयोग 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम क्रॉस चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें।

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन में सहयोग हेतु आप अपनी दान राशि निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कर सकते हैं। कृपया राशि जमा कराते ही श्री मनोज नेगी (9540040388) अथवा श्री अरुण सैनी (8527557756) को सूचित अवश्य करें ताकि आपको तत्काल रसीद भेजी जा सके। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है –

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'
खाता सं. 09481000000276 IFSC Code : PSIB0020948
पंजाब एंड सिंध बैंक, कालकाजी, नई दिल्ली

यदि आप अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं तो कृपया 9650183339 से संपर्क करें

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सार्वदेशिक आर्य वीर दल जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास वाराणसी

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी – स्वागताध्यक्ष
आर्य ज्ञानेन्द्र गांधी – संयोजक
सतीश चड्डा – व्यवस्था संयोजक

स्थानीय संपर्क सूत्र - प्रमोद आर्य (8052852321) दिनेश आर्य (9335479095) राजकुमार वर्मा (9889136019)

वेद-स्वाध्याय

ईश्वरीय शक्ति

यदाकूतात् समसुस्रोद्धृदो वा मनसो वा संभृतं चक्षुषो वा।
तदनु प्रेत सुकृतामु लोकं यत्रऽऋषयो जग्मु: प्रथमजा: पुराणा:।। यजु० 18/58
ऋषि **: विश्वकर्मा।।** देवता - **अग्नि।।** छन्द: **निचृदार्षीजगती।।**

शब्दार्थ - यत् = जो शक्ति-बिन्दु **आकूतात्** = आत्मिक ईक्षण से, आत्मिक संकल्प से **सं असुस्रोत्** = अच्छी तरह चुआ है, विनिपतित हुआ है और **हृद: वा** = या तो हृदय से, बुद्धि से **मनस: वा** = या मन से **चक्षुष: वा** = या आंख (आदि इन्द्रिय) से चूए हुए इसे **सं भृतम्** = तुमने सम्यक्तया धारण कर लिया है तो **तत् उ** = उसे ही लेकर **अनुप्रेत** = चल पड़ो, पीछे हो लो, इस प्रकार तुम **सुकृतां लोकम्** = इस श्रेष्ठ कर्मवालों के लोक को पहुंच जाओगे **यत्र**= जहां, जिस लोक को **प्रथमजा:** = तुमसे पहले उत्पन्न हुए **पुराणा:** = पुराने **ऋषय:** = ऋषि लोग **जग्मु:** = पहुंचते रहे हैं।

विनय - उस लोक को उड़ने का, उस लोक में पहुंचने का मार्ग बड़ा सहज हो जाता है, यदि किसी तरह हमारी वैयक्तिक प्रकृति उस ओर झुक जाए, उस ओर प्रवृत्त हो जाए, उधर चलने लगे; हठयोग की भाषा में, यदि किसी तरह हमारी कुण्डलिनी शक्ति का जागरण हो जाए, क्योंकि उस अवस्था में हम बरसती हुई ईश्वरीय शक्ति के धारण करने के योग्य हो जाते हैं, तब हमें ईश्वरीय-शक्ति का एक बिन्दु मिल जाना पर्याप्त होता है। उस एक ही शक्ति-बिन्दु को लेकर हमारी वैयक्तिक प्रकृति (शक्ति) चल पड़ती है और हमें बड़ी आसानी से हमारे ध्येय तक पहुंचा देती है। प्रभु की दया होने पर यह शक्ति-बिन्दु 'आकूत' से, आत्मिक ईक्षण व आत्मिक सङ्कल्प से चूता है, गिरता है। इस शक्ति-बिन्दु का निपात अपनी आत्मा के आकूत से या बहुधा दूसरी किसी बलवान महान् आत्मा (गुरु) के आकूत से हुआ करता है। यह शक्ति-निपात आकूत से आकर गुरु के हृदय से या मन से या आंख से प्रकट होता है। गुरु इस शक्ति को या तो अपने हृदय से शिष्य के हृदय में डालते हैं, या अपने मनसे शिष्य के मन में, या कभी अपनी आंख से ही शिष्य की आंख में इसका संचार कर देते हैं। ऋषियों ने बताया है, आत्मा का निवास सुषुप्ति में हृदय में होता है, स्वप्न में मन में और जाग्रत् में दक्षिणाक्षि में होता है। जो हो, परमगुरु परमेश्वर की कृपा होने पर 'आकूत' द्वारा नाना प्रकार से शक्ति का विनिपात हुआ करता है और अधिकारी आत्मा (शिष्य) इसे अपने में अच्छी तरह धारण, संभृत कर लेता है। धन्य हैं वे पुरुष जिन्हें भगवान् का ऐसा आशीर्वाद प्राप्त होता है। भाइयो! यदि तुम्हें कभी कोई शक्ति-निपात प्राप्त हुआ है और तुमने उसे संभृत कर लिया है तो तुम उसे ही लेकर चल पड़ो, नि:शंक होकर चल पड़ो और समझो तुम्हें साफ़-सीधा चौड़ा मार्ग मिल गया है। निश्चय से तुम अपने अभीष्ट लोक को पहुंच जाओगे, उस सुकृतों के लोक को, श्रेष्ठ कर्मवालों के लोक को पहुंच जाओगे जहां तुमसे पहले पैदा हुए पुराने सब ज्ञानी ऋषि लोग पहुंचते रहे हैं। **-: साभार :-**

वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

धडिचा प्रथा जैसे कलंक शेष हैं भारत में : आर्यसमाज को जागना होगा

आपने पशुओं की मंडी सुनी होगी, सब्जी मंडी या अन्य रोजमर्रा के सामान की मंडियां सुनी होंगी लेकिन क्या कभी आपने सुना है कि इस 21 वीं सदी में देश के अन्दर औरतों को मंडियां सजाकर जानवरों की तरह खरीद फरोख्त किया जा रहा है। भले ही देश में आये दिन महिलाओं के साथ होने वाले शोषण के खिलाफ नए और सख्त से सख्त कानून बनाये जा रहे हों लेकिन सख्त कानून बनाये जाने के बावजूद भी कई जगह अभी भी कुप्रथाओं के नाम पर महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं, बेशक देश में नेता नारी सशक्तिकरण की बड़ी-बड़ी बातें करते हों पर यह सुनकर आपको दु:ख होगा कि ऐसे दौर में भी देश के अन्दर बीबियां किराए पर मिलती हैं वो भी बाकायदा मंडी लगाकर।

असल में मध्य प्रदेश के शिवपुरी में चल रही इस प्रथा को धडिचा प्रथा कहा जाता है। इस प्रथा के अनुसार यहां हर साल एक मंडी लगाई जाती है जिसमें भेड़-बकरियां, गधे-घोडे नहीं लड़कियों को खड़ा किया जाता है। बताया जा रहा है कि यहां हर साल पुरुष आते हैं और अपनी मनपसंद की लड़की को चुनकर उसकी कीमत तय करते हैं। इन लड़कियों और महिलाओं की बोली तक लगाई जाती है। किराए की कीमत इस बात पर निर्भर करती है कि युवा महिला का परिवार कितना गरीब है और उसे पैसों की कितनी जरूरत है।

सुनकर भले ही दु:ख हुआ हो लेकिन आज के अत्याधुनिक युग में भी धडिचा प्रथा जारी है। इस कुप्रथा के नियम अनुसार दस रुपये के स्टाम्प पर औरतों की खरीद फरोख्त होती है। दरअसल इस प्रथा की आड़ में गरीब लड़कियों का सौदा होता है। बताया जाता है यह सौदा स्थाई और अस्थाई दोनों तरह का होता है। सौदा तय होने के बाद बिकने वाली औरत और खरीदने वाले पुरुष के बीच एक अनुबन्ध किया जाता है। यह अनुबन्ध खरीद की रकम के मुताबिक 10 रुपये से लेकर 100 तक के स्टाम्प पर किया जाता है।

सामान्य तौर पर अनुबंध छह माह से कुछ वर्ष तक के होते हैं। अनुबंध बीच में छोड़ने का भी रिवाज है। इसे छोड़- छुट्टी कहते हैं। इसमें भी अनुबंधित महिला स्टाम्प पर शपथपत्र देती है कि वह अब अनुबन्धित पति के साथ नहीं रहेगी। ऐसे भी बहुत से मामले हैं, जिसमें अनुबन्ध के माध्यम से एक के बाद एक आठ से दस अलग-अलग धड़ीचा प्रथा के विवाह हुए हैं। इस कुप्रथा के फलने-फूलने का मुख्य कारण गरीबी और लडकियों की अशिक्षा है।

यह भी बताया जा रहा है कि यहां हर साल करीब 300 से ज्यादा महिलाओं को दस से 100 रूपये तक के स्टांप पर खरीदा और बेचा जाता है। स्टांप पर शर्त के अनुसार खरीदने वाले व्यक्ति को महिला या उसके परिवार को एक निश्चित रकम अदा करनी पड़ती है। रकम अदा करने व स्टांप पर अनुबंध होने के बाद महिला निश्चित समय के लिए उसकी पत्नी बन जाती है। मोटी रकम पर सम्बन्ध स्थायी होते हैं, वरना सम्बन्ध समाप्त। अनुबन्ध समाप्त होने के बाद मायके लौटी महिला का दूसरा सौदा कर दिया जाता है। अनुबन्ध की राशि समयानुसार 50 हजार से 4 लाख रूपये तक हो सकती है। हालाँकि यह अनुबन्ध पूरी तरह से गैरकानूनी है, कई बार इसे सरकार के समक्ष उठाया गया। लेकिन, महिलाएं या पीड़ित सामने नहीं आती हैं। जिस कारण यह कुप्रथा आज भी चल रही है।

चौंकाने वाली बात यह है कि आज तक इसके खिलाफ कोई कारवाई नहीं की गई है। सर्कस में, सिनेमा में जानवरों के इस्तेमाल पर रोक लगाने वाले मानवाधिकार आयोग का इस ओर आज तक ख्याल ही नहीं गया! ऐसा प्रतीत होता है कि गरीब परिवारों की महिलाएं और लड़कियों की कीमत इन जानवरों से भी गई गुजरी हैं!

......सर्कस में, सिनेमा में जानवरों के इस्तेमाल पर रोक लगाने वाले मानवाधिकार आयोग का इस ओर आज तक ख्याल ही नहीं गया! ऐसा प्रतीत होता है कि गरीब परिवारों की महिलाएं और लड़कियों की कीमत इन जानवरों से भी गई गुजरी हैं! "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" की केंद्र सरकार की योजना के बाद भी हमारे अपने देश में बेटियों को भेड़-बकरियों की तरह बेचा जा रहा हैं! ताज्जुब की बात तो यह भी है कि आज तक बड़ी-बड़ी नारी सशक्तिकरण की संस्थाओं ने भी इनकी सुध नहीं ली।...... आर्य समाज की अगुवाई में स्व. महात्मा नारायण स्वामी ने जनवरी 1929 में मकर सक्रांति के दिन रैगर समाज की बच्चियों के लिए आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की। आरम्भ में केवल पांच छात्राएं ही शिक्षा के लिए आगे आई थीं किन्तु इसके बाद आज इस पाठशाला से निकली अनेकों बेटियां उच्च पदों पर आसीन हुईं।....

"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" की केंद्र सरकार की योजना के बाद भी हमारे अपने देश में बेटियों को भेड़-बकरियों की तरह बेचा जा रहा है! ताज्जुब की बात तो यह भी हैं कि आज तक बड़ी-बड़ी नारी सशक्तिकरण की संस्थाओं ने भी इनकी सुध नहीं ली।

यानि इस प्रथा का मूल कारण अशिक्षा ही कहा जाये क्योंकि शिक्षित समाज ऐसी बुरी कुप्रथाओं का त्याग कर देता है। यही कारण है कि आर्य समाज ने अपने शुरूआती काल से ही नारी को शिक्षित करने का शुरूआती कदम उठाकर लड़कियों को शिक्षा दिलाने की वकालत की वह भी उस समय जब लडकियों को पर्दे की चीज समझा जाता था। कौन भूल सकता है कि रैगर समाज की लड़कियों के उत्थान का वह चरण जब उन्हें अछूत समझा जाता था और कुप्रथाओं के कारण कई जगह तो उन्हें देहव्यापार में धकेल दिया जाता था।

हालात ऐसे बताये जाते हैं कि अनेकों लोग उन्हें हेय दृष्टि से देखने लगे थे किन्तु आर्य समाज की अगुवाई में स्व. महात्मा नारायण स्वामी ने जनवरी 1929 में मकर सक्रांति के दिन रैगर समाज की बच्चियों के लिए आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की। आरम्भ में केवल पांच छात्राएं ही शिक्षा के लिए आगे आई थीं किन्तु इसके बाद आज इस पाठशाला से निकली अनेकों बेटियां उच्च पदों पर आसीन हुईं। यह सब शिक्षा का प्रभाव था ऐसे ही आज धडिचा प्रथा के विरुद्ध भी आर्य समाज को आगे बढ़ना होगा ताकि उन बेटियों को भी समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान से जीने का अवसर मिले। इस पर भी गहरे चिन्तन-मनन करने की आवश्यकता है। वरना हमारे महापुरुषों ने जो रास्ता दिखाया है, उस पर दृढ़ प्रतिज्ञ होकर चले बिना अस्तित्व को बरकरार रखना संभव नहीं हो पाएगा।

- सम्पादक

विश्वभर में इस्लाम को क्यों छोड़ रहे हैं युवा ?

परिवर्तन दुनिया के एक महान नियम में एक है जो हमेशा होता रहा है। कोई सदी, कोई काल, कोई साम्राज्य हमेशा नहीं रहा। मुगल काल बीते दिन की बात हो गयी। महान रोमन साम्राज्य और ऑटोमन साम्राज्य धराशाही हुए तो ग्रेट ब्रिटेन जिसके राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था आज वह भी छोंटे से भू भाग में सिमट गया। सिकंदर महान ने सपना देखा था कि वह दुनिया का हर कोना जीत लेगा। हर महासागर का तट उसके कब्जे में होगा। लेकिन भारत के पश्चिमी हिस्से तक आते-आते सपना दम तोड़ गया।

साम्राज्यों की तरह ही पंथ भी परिवर्तनशील हैं। जैसे कि ईसाई पंथ वर्ष 1054 में दो हिस्सों में संप्रदाय में बंट गया था। इस्लाम का भी यही हाल हुआ। कभी खुद को एक कहने वाला इस्लाम आज शिया, सुन्नी, अहमदिया, बोहरा और न जाने कितने संप्रदायों में बंट चुका है। आज से करीब 3500 साल पहले कांस्य युग के दौरान ईरान में जरथुस्त्र ने एकेश्वरवाद की नींव रखी थी। उस दौर में पारसी धर्म के अग्नि मंदिरों में इबादत के लिए हजारों लोग जुटा करते थे। इसके एक हजार बरस बाद फारस के साम्राज्य का पतन हो गया। नतीजा यह हुआ कि पारसी धर्म के अनुयायियों पर उनके नए शासकों ने जुल्म ढाने शुरू कर दिए। क्योंकि उनका मजहब इस्लाम हो चुका था।

असल में जब हम किसी के विचार को धर्म का दर्जा देते हैं, हम इस हकीकत को जानते हुए भी एक बात नहीं मानते हैं, वह यह कि जब भी कोई नया धर्म शुरू करता है, तो पहले उसे एक नया संप्रदाय माना जाता है। लोग यह मानने लगते हैं कि यह पवित्र है। किन्तु जब उस मजहब की मौत होती है, तो यह एक मिथक बन जाता है। फिर उसका आखिरी सत्य का दावा भी खत्म हो जाता है। मिस्र, यूनान और दूसरी प्राचीन सभ्यताओं के एक दौर के धर्म आज किस्से-कहानियों में तब्दील हो चुके हैं। अब उन्हें पवित्र मान कर उनका अनुसरण कोई नहीं करता।

......पिछले दिनों एक ऐसी ही मुस्लिम लड़की सारा की कहानी बीबीसी पर प्रसारित हुई थी। इसे लेकर तब काफी विवाद भी हुआ था। सारा उस समय कनाडा चली गयी थी जब उसकी मां ने इस्लाम छोड़ने के फैसले पर कहा था कि तुम्हें जहन्नुम की आग में जलना होगा। अब सारा का कहना है कि अब जब मैं इस्लाम को छोड़ चुकी हूं, मुझे ऐसा लगता है कि अब मैं पहले से ज्यादा खुश और संतुष्ट हूं और जहन्नुम की आग से बच गयी हूँ।..... मिस्र के एक एक्स मुस्लिम दारुल इफ्ता भी मानता है कि इस्लाम छोड़ने के बढ़ते चलन के लिए धार्मिक हिंसा खास कारण है। इसका दावा है कि 'अतिवादी, चरमपंथी और तकफीरी समूहों ने इस्लाम के नाम पर बर्बर कार्रवाइयां की हैं......

ऐसे ही आज भले ही दक्षिण एशिया में मुसलमान बड़े-बड़े दावे करते हों लेकिन सच यह है कि जहां अरब जगत में कट्टर धार्मिक आवाजों का शोर बढ़ रहा है वहीं दूसरी तरफ बड़ी संख्या में अरब नौजवान अब इस्लाम को छोड़ने और खुद के नास्तिक होने की घोषणा सरेआम करने लगे हैं। ये नौजवान इस्लाम में धार्मिक विचारों सोशल मीडिया पर खुलेआम सवाल उठा रहे हैं।

यह केवल अरब अमेरिकी या पश्चिमी देशों के युवा नहीं बल्कि यहां तक कि पाकिस्तान, ईरान और सूडान जैसे सख्त इस्लामी शासन वाले रूढ़िवादी देश भी इस्लाम छोड़ रहे युवाओं की चपेट में आ चुके हैं। हाल ही में जब हमने अरबी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में फेसबुक पर एक्स मुस्लिम पेजों की खोज की, तो अलग-अलग अरब देशों के नामों के साथ करीब 250 से अधिक पेज पाएं जिनसे हजारों की संख्या लोग जुड़े हुए है। ऐसा ही हाल ट्विटर तथा अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर मिला बल्कि ट्विटर पर एक्स मुस्लिम यानि पूर्व मुस्लिम युवाओं द्वारा इस्लाम पर सवाल उठाती अनेकों वीडियो भी मिलीं।

ब्रिटिश अखबार दी इंडिपेंडेंट ने एक्स-मुस्लिम कौंसिल की संस्थापक मरियम नमाजी के हवाले से लिखा है कि मुस्लिम देशों में 'इस्लाम छोड़ने की सुनामी' आई हुई है। बहुत सारे लोग धर्म छोड़ रहे हैं, लेकिन ये लोग डर के मारे खुलकर सामने नहीं आ रहे। अपने देश छोड़कर ब्रिटेन, अमेरिका या भारत जैसे किसी खुले समाज में रहना पसंद करते हैं। उन्होंने बताया कि मैं ऐसे कई लोगों को जानती हूं जो बाहर से तो खुद को मुसलमान दिखाते हैं, लेकिन अंदर ही अंदर इस मजहब से नफरत करने लगे हैं। मरियम खुद भी ईरान की रहने वाली हैं और अपना देश छोड़कर वह अब ब्रिटेन में बस गई हैं। इसी तरह इंडोनेशिया की चीफ जस्टिस इफा सुदेवी ने इस्लाम त्यागकर हिंदू धर्म अपना लिया था। मतलब यह कि ये युवा इस्लाम की कुछ परंपराओं पर सवाल उठा रहे हैं। खुद को रुढ़िवादी खयाल से आजाद करा रहे हैं। इंटरनेट पर इस्लाम के बारे में नई जानकारी उपलब्ध होने से इन एक्स-मुस्लिमों का हौसला बढ़ा है। वह अपने जेहन में अपने मजहब को लेकर उठ रहे सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश कर रहे हैं।

इनके सवाल हैं कि मैं ऐसे किसी धर्म का हिस्सा नहीं रह सकता जो यह तय करता है कि आपको कैसे कपड़े पहनने हैं, कैसा हुलिया रखना है, दाढ़ी रखनी है या मूंछ रखनी है। यूरोप और अमेरिका में रहने वाले कई मुसलमानों ने लिखा है कि आधुनिक दुनिया में ऐसी पहचान के साथ नहीं रहा जा सकता, जिसमें लोग आपको संदिग्ध आतंकवादी मानते हो। मुसलमानों की यह पढ़ी-लिखी जमात आमतौर पर 20-30 बरस के उम्र की है। वह खुद को या तो पूर्व मुसलमान कहते हैं, या फिर नास्तिक। वे फेसबुक, व्हाट्सऐप जैसे सोशल माध्यमों से एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं।

मरियम निजामी ने अपने इंटरव्यू में यह भी बताया कि हमारे संगठन या दुनिया के तमाम दूसरे देशों में सोशल मीडिया पर चल रहे ग्रुप्स में ज्यादातर महिलाएं हैं। ऐसे किसी भी ग्रुप या पेज पर जाकर आप एक्स-मुस्लिमों की सोच के बारे में जान सकते हैं। इनमें से कई ने कुरान से लेकर हदीस तक को पढ़ा हुआ है। कुछ ने तो हज भी किया है। सबसे ज्यादा महिलाएं बुर्के और हिजाब जैसी पुरुषवादी परंपराओं से नाराज हैं।

पिछले दिनों एक ऐसी ही मुस्लिम लड़की सारा की कहानी बीबीसी पर प्रसारित हुई थी। इसे लेकर तब काफी विवाद भी हुआ था। सारा उस समय कनाडा चली गयी थी जब उसकी मां ने इस्लाम छोड़ने के फैसले पर कहा था कि तुम्हें जहन्नुम की आग में जलना होगा। अब सारा का कहना है कि अब जब मैं इस्लाम को छोड़ चुकी हूं, मुझे ऐसा लगता है कि अब मैं पहले से ज्यादा खुश और संतुष्ट हूं और जहन्नुम की आग से बच गयी हूँ।

हालांकि अरबवासी भी इस्लाम को छोड़े जाने की तमाम वजहें वही बताते हैं जो बाकी दुनिया के लोग बताते हैं लेकिन कुछ कारण अरब दुनिया से खास तौर से जुड़े हैं। जैसे कट्टर इस्लामिक समूहों की हिंसा से कुछ लोग दुखी होकर इस्लाम छोड़ रहे हैं। क्योंकि कुछ लोगों को लगता है कि इस्लाम का मुख्य सिद्धांत ही सवालों के घेरे में है। मिस्र के एक एक्स मुस्लिम दारुल इफ्ता भी मानता है कि इस्लाम छोड़ने के बढ़ते चलन के लिए धार्मिक हिंसा खास कारण है। इसका दावा है कि 'अतिवादी, चरमपंथी और तकफीरी समूहों ने इस्लाम के नाम पर बर्बर कार्रवाइयां की हैं, इसकी छवि को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है। साथ ही निजी और सार्वजनिक जीवन में राजनीतिक इस्लाम की घुसपैठ की गयी।

यही नहीं 2014 में ही फलस्तीनी अल-कुद्स अल-अरबी न्यूज वेबसाइट ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें कहा गया है कि अरब देशों में इस्लामी सरकारों की गलतियों के कारण युवा धर्म छोड़ रहे हैं। बहुत सारे धर्मनिरपेक्ष अरब मानते हैं कि अमीर मुस्लिमों ने अपने निजी और गुप्त फायदे के लिए हमेशा से इस्लाम धर्म का इस्तेमाल किया है। अब हम ऐसे मजहब में नहीं रह सकते जहाँ छोटे से जीवन में बड़ी घुटन का सामना करना पड़ता हो। यानि एक्स मुस्लिम के बढ़ते इस चलन से आप समझ सकते है कि दुनिया भर की युवा मुस्लिम महिलायें इस कैद से आजाद हो रही हैं और आन्दोलन चला रही हैं।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग — तीन दिन बाद फिर विशाल सभा

गतांक से आगे -

राजा महोदय पधार गये। पुन: तीन दिन तक सम्मेलन चलता रहा। जो युवक बारात में गये थे, उनके सगे-सम्बन्धी दूर-दूर तक फैले हुए थे। वे सब अपने-अपने सम्बंधियों को बचाना चाहते थे। दूसरों को फँसाने की हिन्दू प्रवृत्ति भी थी। आर्यसमाज शास्त्रार्थ के लिए ललकार रहा था। आर्यसमाजी सुसंगठित व दृढ़ थे। ओजस्वी व्याख्यान होते रहे। अन्त में निश्चय हुआ कि छह मास तक जो क्षमा माँग ले और सत्यव्रत से सम्बंध तोड़ ले, उसे क्षमा कर दिया जावे।

आर्यों के धर्म-भाव पर बलिहारी!

आर्यों के धर्मानुराग पर बलिहारी! केवल एक युवक ने क्षमा माँगी। बीस में से मात्र एक फिसला। वह कौन था? वे थे हमारे पूज्य उपाध्यायजी के सगे बहनोई मीसा कलाँ निवासी श्री लक्ष्मीनारायणजी। इस दिग्विजय ने आर्यों में एक नये जोश का संचार किया। पं. गंगाप्रसादजी के एक उत्साही बन्धु थे श्री लाला बाबू निर्भय। उनके विषय में स्वयं उपाध्यायजी ने लिखा है कि उन्होंने विरोधियों के नाक में दम कर दिया। वे बिन बुलाये विवाहों में जाते और सबमें घुसकर प्रचार करते। अमानवीय क्रूर कुरीतियों को उखाड़ने के लिए कितने आर्यवीरों के सिर फूटे, कितनों का सामाजिक बहिष्कार व अन्य-अन्य यातनाओं का सामना करना पड़ा। यह लेखा-जोखा करना आज अति कठिन है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आओ जानें ! सत्य? असत्य?
आओ पढ़ें !
सत्यार्थ प्रकाश

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के अन्तर्गत मध्यप्रदेश राज्य में

प्रथम आर्य कन्या गुरूकुल का शुभारम्भ

महर्षि देव दयानंद द्वारा मानव समाज के उपर किए गए अनगिनत उपकारों में नारी जगत के सम्मान और उत्थान का विशेष स्थान है। भारत देश में एक समय ऐसा भी था कि जब नारी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था, सती प्रथा और विधवा विवाह पर पाबन्दी जैसी कुप्रथाओं का प्रचलन था। आर्य समाज

के संस्थापक महर्षि दयानंद जी की प्रेरणा से संपूर्ण भारत में नारी शिक्षा का अभियान प्रारंभ हुआ, जगह-जगह कन्या गुरुकुलों की स्थापनाएं हुई और नारी को उनका खोया हुआ सम्मान और अधिकार वापिस मिला। किंतु इसे एक विचित्र विडम्बना ही कहा जाएगा कि आर्य समाज की स्थापना के 145 वर्ष पूर्ण होने के बाद भी मध्यप्रदेश जैसे संभ्रांत राज्य में अब तक कोई कन्या गुरुकुल नहीं था।15 सितंबर 2019 को मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में मोहन बड़ोदिया, जिला शाजापुर, म.प्र. में महर्षि दयानंद आर्ष कन्या गुरुकुल का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी की उपस्तिथि में डा.नंदिता शास्त्री जी,वाराणसी के निर्देशन में 10 से 12 बजे तक 20 कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। इसके बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी ने अपने करकमलों से ध्वजारोहण किया तथा दीप प्रज्ज्वलित कर कन्या गुरुकुल के नव निर्मित भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रमुख अधिकारी, कार्यकर्ता, अनेक सामाजिक प्रतिष्ठित महानुभाव और राजनेता भी उपस्थित थे। मध्य प्रदेश में पिछले 2 महीनों से भारी वर्षा होने के बावजूद 15 सितंबर 2019 को मौसम साफ रहा और क्षेत्रीय आर्य जनों की भारी उपस्थिति के साथ-साथ दिल्ली, झारखंड और महाराष्ट्र से भी महानुभाव पधारे।

वर्तमान में यह गुरुकुल निर्माणाधीन अवस्था में ही गतिशील है, गुरुकुल के भव्य भवन के निर्माण की लागत लगभग 2 करोड़ है, किंतु 40 प्रतिशत निर्माण कार्य पूर्ण होते ही गुरुकुल में कन्याओं की शिक्षा का कार्य आरंभ कर दिया गया है। इस अवसर पर प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री इंद्रप्रकाश गांधी, श्री दलवीर सिंह जी राघव, श्री वेदप्रकाश शर्मा(आई.पी.एस) डा. नंदिता जी शास्त्री, डा. राकेश शर्मा जी, डा. राकेश उपाध्याय जी, उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यायमूर्ति वीरेंद्रदत्त ज्ञानी जी ने की। छात्राओं को शिक्षा देने हेतु वाराणसी से आचार्या वर्षा जी और आचार्या प्रज्ञा वेदालंकार जी के साथ अन्य शिक्षिकाएं अध्यापन का कार्य करेंगी।

कन्या गुरुकुल में इस अवसर पर उपस्थित कई अभिभावकों ने आगामी सत्र

में अपनी कन्याओं को गुरुकुल में प्रवेश दिलाने की चर्चा की। इस समय गुरुकुल में कन्याओं के आवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था हेतु मात्र सहयोग राशि 1000/-रुपये ली जा रही है। जबकि शिक्षा निःशुल्क है। इस कन्या गुरुकुल के शुभारंभ अवसर पर आर्य जगत के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी ने अपना शुभकामना संदेश भेजा जिसे पढ़कर सुनाया गया। उन्होंने सभी कन्याओं, अध्यापिकाओं, अधिकारियों कार्यकर्त्ताओं और उपस्थित महानुभावों को अपना आशीर्वाद दिया और गुरुकुल के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

कार्यक्रम की सफलता में प्रमुख सहयोगी कार्यकर्त्ता श्री काशीराम अनल, श्री वेदप्रकाश आर्य,श्री लक्ष्मी नारायण आर्य, श्री दक्षदेव गौड़, श्री ललित नागर, श्री दरबार सिंह आर्य, श्री मोहन आर्य, श्री चैनसिंह आर्य, श्री गोकुल आर्य, श्री हरि सिंह आर्य, श्री शंकर सिंह आर्य आदि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा। हजारों की संख्या में उपस्थित आर्यजनों ने गुरुकुल को निरंतर सहयोग देने का फार्म भरकर संकल्प धारण किया। गरूकुल के भवन निर्माण हेतु भी दान दाताओं ने बढ़ चढ़कर दान दिया। प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री इंद्रप्रकाश गांधी जी ने सभी का धन्यवाद किया।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज की सेवा संस्था "सहयोग" द्वारा यज्ञ कार्यक्रम के साथ वस्त्रों का वितरण

अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के अंतर्गत महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा और आशीर्वाद से सहयोग निरंतर निर्धन बस्तियों में लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उन्हें वस्त्र, जूते, चप्पल और उनके बच्चों को खिलौने, स्टेशनरी आदि सामानों का वितरण करके उनकी कठिन तथा अभावग्रस्त जीवन यात्रा को सरल, सहज और साधन संपन्न बनाने का प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। 10 सितंबर 2019 को सहयोग की सेवा टीम जहांगीर पुरी के ब्लॉक में गई और वहां पर उन्होंने पहले यज्ञ का सुंदर आयोजन किया। यज्ञ में वहां के सभी निवासी बड़ी

निष्ठा के साथ सम्मिलित हुए और सभी ने स्वाहा करते हुए यज्ञ में आहुति दी। इसके बाद उन्हें यज्ञ का महत्त्व भी विस्तार से समझाया गया। इसके बाद सभी स्त्री, पुरुषों को सहयोग की तरफ से वस्त्र एवं जरूरत के सामान वितरित किए गए।

सहयोग द्वारा सेवा के इस क्रम में 17 सितंबर 2019 को आर्य समाज डी.सी. एम के नजदीक बन रही सोसाईटी में मजदूरों के बीच सहयोग की टीम पहुंची। आर्य समाज के सिद्धांत और मान्यताओं से अनजान मजदूरों को यजमान बनाकर सहयोग ने यज्ञ का आयोजन कर उनसे आहुतियां डलवाई और उन्हें बताया कि यही संसार सबसे श्रेष्ठ कर्म है और यही सबसे बड़ा परोपकार है। इस तरह से वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए सहयोग ने वहां वस्त्रों का वितरण किया।वहां उपस्थित स्त्री, पुरूष और बच्चों के चेहरे उस समय खिल उठे जब उन्हें यज्ञ के उपरांत उपहार में उनके मन मुताबिक वस्त्र आदि प्राप्त हुए। सभी लोग आर्य समाज और महर्षि दयानंद का जय-जयकार कर रहे थे। इस तरह लगातार सहयोग द्वारा आर्य समाज का प्रचार प्रसार और सेवा का कार्य निरंतर गतिशील है।

23 सितंबर 2019 को जहांगीर पुरी में रहने वाली सहयोग की एक कर्मचारी महिला के बेटे के जन्मदिवस पर यज्ञ करने के अनुरोध को स्वीकार करते हुए सहयोग की टीम पुन: जहांगीरपुरी पहुंची। वहां पर यज्ञ का आयोजन कर वैदिक रीति से यज्ञ किया। यज्ञ में सैंकड़ो महिलाएं, बच्चे और पुरुष सम्मिलित हुए। सभी ने गायत्री मंत्र का उच्चारण किया और आहुति दी। जिस बच्चे का जन्म दिन था उसे सबने आशीर्वाद दिया, सहयोग ने भी उसे उपहार स्वरूप वस्त्र दिए। और वहां उपस्थित अन्य लोगों को वस्त्र प्रदान किए, इस यज्ञ और वस्त्र वितरण कार्यक्रम से अन्य सभी लोग बहुत प्रभावित हुए और उन्होंन अपने निकट आर्य समाज मंदिर में यज्ञ में भाग लेने के लिए संकल्प लिया।

आर्य गुरुकुल तिहाड ग्राम के विद्यार्थी अशोक आर्य ने गोल्ड मैडल जीतकर बनाया कीर्तिमान

आर्य गुरुकुलों में हमेशा से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु ऐसा वातावरण तैयार किया जाता है कि जिसमें विद्यार्थी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से अपने प्रतिभा का विकास कर सकें। उत्तम शिक्षा के साथ-साथ संगीत, आधुनिक तकनीकी शिक्षा और खेलकूद के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को निखारने का समुचित अवसर दिया जाता है। इन्हीं पारंपरिक सिद्धांतों के परिणामस्वरूप गुरुकुलों के विद्यार्थी अपने जीवन में हर तरह की स्थिति, परिस्थिति का सामना करते हुए मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में अहम भूमिका का निर्वहन करते हैं। अभी 21 सितम्बर 2019 को आयोजित विद्याभारती नैशनल टूर्नामेंट में आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव के विद्यार्थी अशोक आर्य (नागालैंड) ने तायी क्वाण्डो प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल जीत कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। ज्ञातव्य है कि ये वही बच्चे हैं जो आदिवासी क्षेत्रों में जहां शिक्षा का नामोंनिशान तक नहीं है और अगर तथाकथित सभ्य समाज इनको उस जंगल

बस्ती से शहरों में लेकर भी आता है तो केवल मजदूरी आदि कराने के लिए। लेकिन आर्यसमाज की मान्यता है कि प्रत्येक मनुष्य परमात्मा की अनुपम कृति है और इसलिए मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए शिक्षा के साथ वैदिक धर्म और संस्कृति तथा संस्कारों की सम्पत्ति देकर राष्ट्र के उत्थान में अहम भूमिका निभाई जाए। अशोक आर्य, तिहाड़ ग्राम के गुरुकुल के कक्षा 12वीं का छात्र है। ऐसे सैंकड़ो छात्रों को अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत विभिन्न गुरुकुलों में शिक्षा, आवास, भोजन, चिकित्सा आदि की समस्त सुविधाओं के साथ उत्तम शिक्षा प्रदान की जा रही है। **दिल्ली सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से अशोक आर्य को हार्दिक शुभकामनाएं।**

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर में 1 अक्तूबर को पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी होंगे 'प्रथम विश्व आर्यरत्न' सम्मान से सम्मानित

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास, ओल्ड कैंपस के पास, मोहन पुरा पुलिया के आगे रातानाड़ा, जोधपुर में 29 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2019 तक ऋषि स्मृति सम्मेलन का भव्य एवं विराट स्तर पर आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानों, भजनोपदेशकों और संन्यासियों के उपदेश होंगे। कार्यक्रम में (राष्ट्रीय वेद गोष्ठी) का आयोजन किया जा रहा है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और स्मृतिभवन न्यास की ओर से आर्यरत्न उपाधि से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। – *मन्त्री*

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने किया स्वामी श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम देहरादून का दौरा एवं वृक्षारोपण

दिनांक 16 सितम्बर, 2019 को देहरादून स्थित स्वामी श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम में पहुंचें। श्री विनय आर्य जी का वहां के छात्र-छात्राओं ने स्वागत गीत गाकर अभिनन्दन किया। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने विद्यार्थियों को ज्ञान का महत्व बताते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि संसार में दो तरह की सम्पत्ति होती है- 1. वह जिसे चोर चुराकर ले जा सकता है, जो बांटने से घटती है और 2. वह जिसे न चोर चुराकर ले जा सकता है और वह बांटते से बढ़ती है। इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को समझाने के लिए आर्यजी ने कई सारगर्भित और रचनात्मक उदाहरण प्रश्नोत्तर के रूप में प्रस्तुत किए। उन्होंने बच्चों को समझाया कि विद्या ही वह परम धन है जो हर स्थिति और हर काल में मनुष्य का साथ देता है। इसलिए आपका यह समय विद्यार्जन करने का है। सभी अपने समय का का सदुपयोग करते हुए पूरी निष्ठा से अध्ययन करें। इस अवसर पर वहां के अधिकारी, अध्यापक-अध्यापिकाएं और कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। सभा महामन्त्री जी ने आश्रम के आधिकारियों से बच्चों को दिल्ली भ्रमण का न्यौता भी दिया। उन्होंने कहा कि आप जब चाहें बच्चों के साथ दिल्ली पधारें। हम आपके भ्रमण की सम्पूर्ण व्यवस्था सभा की ओर से करेंगे। आश्रम के सचिव श्री ओ.पी. नांगिया जी ने श्री विनय आर्य जी का इस प्रेरणाप्रद उद्बोधन तथा आश्रम में पधारने के लिए धन्यवाद किया। इस अवसर पर आश्रम परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।

द. अफ्रीका से पधारे युवा संन्यासी स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी का स्वागत

आर्यसमाज दक्षिण अफ्रीका में वेद प्रचार कार्य कर रहे स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती शनिवार 21 सितम्बर, 2019 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में पधारे। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पीतवस्त्र के साथ उनका स्वागत किया एवं वैदिक साहित्य भेंट किया। इस अवसर पर आर्यसमाज हनुमान रोड के मन्त्री श्री विजय दीक्षित जी एवं श्री गोविन्दराम जी भी उपस्थित थे।

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो 5,10,20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ:150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

-: विशेष सूचना :-

जो श्रद्धालु महानुभाव वैदिक धर्म महासम्मेलन वाराणसी में भाग लेने के लिए हवाई जहाज, रेल अथवा सड़क यातायात के माध्यम से पहुंच रहे हैं वे आवास व्यवस्था हेतु अपनी सूचना 9540086759 पर व्हाट्सएप्प करें अथवा sammelanvaranasi@gmail.com ईमेल करें।

1. आने वाले व्यक्तियों की संख्या : ....
2. ग्रुप लीडर का नाम : ....
3. ग्रुप लीडर का फोन नं. : ....
   (एक अतिरिक्त नं. भी दें) : ....
4. कहाँ से आ रहे है : ....
5. वाराणसी पहुंचने की तिथि : ....
6. वाराणसी किस स्टेशन पर पहुचेंगे : ....
7. ट्रेन का पहुचने का समय : ....
8. वापसी की तिथि : ....
9. वापसी का समय और स्टेशन : ....

यदि आप ग्रुप में न आकर व्यक्तिगत आ रहे है, तब भी यह सूचना व्यक्तिगत रूप में भेजे। यह सूचना अगर पहले ही दे दी गयी है तो दोबारा न भेजें। कृपया उपरोक्त सूचना भेजकर सहयोग करें, हम आपको बेहतर और आरामदायक सुविधा देने के लिए प्रयासरत हैं।

- सतीश चड्डा, व्यवस्था संयोजक

Happiness and Gratification of Desires

Generally speaking, fulfilment of our bodily needs is regarded as happiness

- Dharmpal Arya

A hungry man kills his hunger with food. His tongue finds it delicious. The tongue's sense of taste is gratified. The man feels happy. He feels thirsty. He drinks water. It is not good enough. He puts ice cubes in it, adds sugar and lemon juice. It is refreshing. He sips it with relish. He has never enjoyed anything better.

Soft, sweet music is being played on the radio. He leaves his work to enjoy it. Tonight a dance is to be held. He will go to it. There will be fun for his eyes and ears.

In this way man finds pleasure in the gratification of his senses and feels happy. Our senses of touch, sight, hearing, smell and taste are aids to the fulfilment of our desires. If deprived of these sensual pleasu res we feel terribly grieved. Because man finds happiness in the fulfiment of his desires he directs his energy to procure those things that will satisfy them .

Today the most important means of acquiring desired objects is money. Therefore man is busy accumulating wealth. He is prepared to employ any means to make money because he thinks happiness will surely follow it as day follows night. In these times it is not beyond man to get what he desires for his pleasures. Objects that not very long ago were only within the reach of a king or a wealthy person have been brought within the reach of common man through the wonders of science. Today he is able to gratify his senses of sight and hearing through the medium of films, radio, television and records. He can, at any time, hear a song composed by the greatest composer. If he desires to see his favourite artist dancing or acting before him it is not impossible. Science has invented various kinds of objects and has removed all obstacles that can prevent him from getting them. Therefore, modern man can easily gratify his senses and go on doing so until he dies.

Inspite of this, is man really happy? Has he discovered true happiness? It is very difficult to say we will have to admit that the angle from which man judges his happiness is faulty. His in-perpetration of what really constitutes happiness is erroneous. Material wealth and sensual objects cannot give him true happiness. Can anyone say with certainty that all wealthy people are truly 'happy or that all poverty-stricken beings are really miserable? This is not so. Yes, it is possible that a man of poor means considers the rich to be happier than he himself is. This

feeling remains within him as long as he does not see what life the rich lead, or, if he himself is fortunate enough, until he one day experiences the life of a wealthy man. A rich person can never be contented no matter how much he possesses. He who has made one million thinks of making ten millions. He who has millions thinks in terms of billions. A man who owns a car envies the one who has more than one. A lady who possesses a twenty five rand sari hopes for the day when she could afford a forty rand sari. Those who are blessed with wealth are not always happy. A person who has been able to acquire everything that the world has to offer still seems unhappy.

Why should it be so?

The reason is that pleasu re-giving objects cannot give one true and everlasting happiness. Pleasure derived through the senses is temporary or momentary. While we are enjoying a certain thing we are happy; after enjoyment we become our sad and dejected former selves. This does not mean that eating an ice-cream or listening to a favourite song is not pleasure-giving. They barely quench your craving. In fact they multiply it. Once you enjoy the pleasures of a certain thing your mind will want more. Even when your senses have lost their power of enjoyment your desire will remain. The Upanishad says that tranquillity or peace of mind cannot be attained by the gratification of desires. Gratification inflames passions as oil dropped on fire incites flames.

- President,
Delhi Arya Pratinidhi Sabha

निर्वाचन समाचार

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल

नई दिल्ली

प्रधान : श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी
महामन्त्री : श्री राकेश भटनागर
कोषाध्यक्ष : श्री ओमबीर सिंह

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अतः दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

बाढ़ पीड़ितों के लिए 32 लाख 75 हजार 500 की सहायता

महाराष्ट्र के कोल्हापुर, सांगली, सतारा में आई विनाश कारी बाढ़ के कारण वहां के नागरिकों को भारी नुकसान और समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस प्राकृतिक आपदा के दुष्प्रभाव से बचाव-राहत कार्य हेतु आर्य समाज औरंगाबाद के नेतृत्व में वहां के सभी मंदिरों, मठों और सहकारी संस्थाओं की ओर से श्री दया राम बसैये, (बंधु) मंत्री आर्य समाज संभाजी नगर, औरंगाबाद तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान ने महाराष्ट्र में बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री की उपस्थिति में 32,75,500/- रुपये का चैक प्रदान किया। **आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से भी इस महान सेवा भावना सहित समाज के परोपकार के लिए बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।**

शोक समाचार

महाशय पीतम सिंह जी को पौत्रशोक

आर्यसमाज इन्द्रा पार्क, पालम कालोनी नई दिल्ली- के प्रधान महाशय पीतम सिंह जी के पौत्र श्री हर्ष शर्मा जी का मात्र 22 वर्ष की अल्पायु में दिनांक 13 सितम्बर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 16 सितम्बर, 2019 को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा के उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान, मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री अनिल कुमार जी का निधन

आर्यसमाज नवीन शाहदरा द्वारा संचालित गौ ग्रास वाहन के चालक श्री अनिल कुमार जी का दिनांक 14 सितम्बर को निधन हो गया।

आचार्य धर्मवीर शास्त्री जी को पितृशोक

आर्यसमाज फोर्ट, मुम्बई के धर्माचार्य आचार्य श्री धर्मवीर शास्त्री जी के पूज्य पिताजी का दिनांक 13 सितम्बर को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सामवेद परायण महायज्ञ

30 सितंबर से 2 अक्तूबर 2019 श्री ओमपाल सिंह आर्य डी/2,128, जीवन पार्क उत्तम नगर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित सामवेद परायण महायज्ञ आचार्य धनंजय आर्य, (संचालक गुरुकुल पौंधा देहरादून) के ब्रह्मत्व में किया जा रहा है। कार्यक्रम में 30-9-19 को दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी के प्रवचन और 1-10-19 को अंकित उपाध्याय के भजन और 2-10-19 को आचार्य अग्निदेव जी के प्रवचन तथा स्वामी प्रणवानन्द जी के आशीर्वचन होंगे। इस अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित हैं। - *ओमपाल सिंह आर्य*

134वां वार्षिक महोत्सव

आर्यसमाज एटा उत्तरप्रदेश का 134वां वार्षिक उत्सव 13 से 15 अक्तूबर 2019 तक आयोजित किया जाएगा। इसमें आर्य जगत के विद्वान, भजनोपदेशक और संन्यासी वृंदों के प्रवचन और भजन लाभ लेने के लिए आप सभी सादर आमंत्रित हैं। - *प्रताप सिंह वर्मा, मन्त्री*

शताब्दी समारोह का आयोजन

आर्य समाज महाराजपुर जिला छतरपुर (म.प्र.) ने अपनी स्थापना के गरिमामय 100 वर्ष पूर्ण हाने के उपलक्ष्य में 2, 3, 4 नवंबर 2019 तीन दिवसीय शताब्दी समारोह का आयोजन सुनिश्चित किया है। इस अवसर पर राष्टीय स्तर के वैदिक विद्वान, संन्यासी एवं भजनोपदेशक वैदिक धर्म के पावन संदेश को धर घर तक पहुंचाने के लिए पधार रहे हैं। इस अवसर पर सभी आर्यजनों इष्ट मित्रों एवं परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

- *दीनदयाल आर्य, प्रधान*

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। -*मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु

ब्रेल लिपि में

सत्यार्थ प्रकाश

मात्र 2000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

64वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज राधापुरी डी-26, दिल्ली का वार्षिकोत्सव 2 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 29-9-19 को सुबह 6 बजे प्रभातफेरी और 2 अक्तूबर को यज्ञ, भजन और प्रवचनों के कार्यक्रम होंगे। -*ऋषिराज वर्मा, मन्त्री*

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज सूरजमल विहार द्वारा 29 सितंबर से 7 अक्तूबर तक आचार्य उदयभानु जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ एवं संगीतमय रामकथा आचार्य कुलदीप (बिजनौर) द्वारा की जाएगी। इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं।

- *अशोक गुप्ता, प्रधान*

भव्य रजत जंयती समारोह

महर्षि दयानंदार्ष गुरुकुल (ब्रह्माश्रम) संस्कृति महाविद्यालय राजघाट(नरौरा बुलंदशहर) उत्तरप्रदेश का 11 से 13 अक्तूबर 2019 तक तीन दिवसीय रजत जयंती समारोह आयोजित किया जा रहा है। आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

- *आ० योगेश शास्त्री, संयोजक*

कार्यकर्ता सम्मेलन संपन्न

15 सितंबर 2019, नारायण स्वामी सभागार लखनऊ में अखिल भारतीय राजार्य सभा ने कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया। सभा के अध्यक्ष आचार्य चंद्रदेव शास्त्री जी ने श्रीराम और श्री कृष्ण की नीतियों को राजनीति प्रयोग करने की बात कही। सभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री आजाद सिंह जी ने संगठन में अनुशासन, मिशनरी और निष्ठा भावना का संदेश दिया। - *मन्त्री*

आर्यसमाज के भजनों के संग्रह हेतु - आवश्यक सूचना

यह सर्वविदित है कि आर्य समाज के भजन सारगर्भित और भावपूर्ण होते हैं। इसके लिए भजनों के लेखकों और मधुर भजन गायकों को बहुत-बहुत बधाई। भजनों का आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जगत् के सभी भाषाओं के भजनोपदेशकों और भजन लेखकों से अनुरोध है कि आप अपने मधुर भजनों की रिकार्डिंग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ईमेल पर भेजकर वैदिक धर्म-संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसर में सहयोग प्रदान करें। दिल्ली सभा का प्रयास है कि विश्व भर में आर्य समाज के भजनोपदेशकों के भजनों को संग्रहीत कर सुरक्षित किया जाए। जिससे आर्य समाज की आने वाली पीढ़ियां भी मधुर भजनों का श्रवण करें और प्रेरणा प्राप्त करके आगे बढ़े।

कृपया अपने भजन सीडी/डी.वी. डी/पैन ड्राइव के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली**-110001 के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें अथवा **9540045898 पर व्हाट्एप्प** करें। - *महामन्त्री*

आर्यसमाज कीर्ति नगर ने की समाज सुधार की पहल
दृढ़ इच्छा शक्ति से ही मिलेगी नशे से मुक्ति - डॉ. सुरेश अरोड़ा

आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली में 22 सितंबर को समाज सुधार हेतु नशा मुक्ति शिविर का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. सुरेश अरोड़ा ने पावर पॉइंट पर बहुत सुंदर तरीके से समझाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा किसी भी तरह का नशा चाहे गुटका, तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट, ड्रग्स या शराब छोड़ने के लिए सबसे पहले इच्छाशक्ति की जरूरत है, उसके बाद में जब हम यह तय कर लें कि हमें नशा नहीं करना तो उस चीज से दूरी बना कर रखना, उसका ध्यान भी नहीं करना। क्योंकि इन उत्पादों में निकोटिन होती है जो स्वास्थ्य के लिए बहुत होते हैं जो लगातार शरीर को दुर्बल बनाते हैं। 69 ऐसे केमिकल होते हैं जो रक्त में मिल जाते हैं और बहुत लंबे समय तक शरीर को हानि पहुंचाते रहते हैं। जब हम दिल से यह तय कर लें कि हमें नशा नहीं करना और इच्छा जागने पर इलायची, लौंग, सौंफ आदि पदार्थों को मुंह में रखकर चबाएं। सांस फूलने पर अदरक आदिको चूसें या सेवन करें। इस संकल्प के साथ कि मुझे नशा बिल्कुल नहीं करना। डॉक्टर साहब ने अपने लम्बे अनुभव के आधार पर आए हुए 23 सदस्यों को यही समझाने का प्रयास किया कि दृढ़ इच्छा शकित से ही मिलेगी नशे से मुक्ति। इस शिविर में

हानिकारक है। अपने आपका उत्सावर्धन करना, अपने मन को स्थिर करते हुए इन वस्तुओं से ध्यान हटाना और सकारात्मक विचार लाना। इनसे भी यदि नशा ना छूटे तो दवाइयों का सहारा लेना पड़ता है। किसी अच्छे विशेषज्ञ डॉक्टर की देखरेख में इलाज कराएं, क्योंकि नशे की एक डोज़ में 7000 केमिकल होते हैं चाहे वह कितना ही बढ़िया उत्पादन पान मसाले का हो या शराब का हो। स्वास्थ्य के लिए 200 हानिकारक पदार्थ उसमें मिले डॉक्टर एस.पी. ब्योत्रा सर गंगाराम हॉस्पिटल के प्रशासनिक अधिकारी हैं, श्रीमती कुसुम ब्योत्रा जो कि समाज सेविका हैं और बड़े सुंदर समाज सेवा के कार्य कर रही हैं, ने आए हुए सभी बीमारों को सुंदर उपहार भी दिए और प्रेरित किया कि आगे से वह नशा नहीं करेंगे। इस अवसर पर आर्य समाज कीर्ति नगर के प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी, उप प्रधान श्री बृजेंद्र पाल आर्य जी तथा अन्य अधिकारी एवं सदस्यगण भी उपस्थित थे। - *सतीश चड्ढा, मन्त्री*

आर्य समाज ने बाढ़ पीड़ितों को बांटी राहत सामग्री

कोटा, 22 सितम्बर। आर्य समाज कोटा द्वारा रविवार को बाढ़ पीड़ित लोगों को राहत सामग्री का वितरण किया गया।

आर्य समाज के पूर्व जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में वैदिक विद्वान अग्निमित्र शास्त्री, आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविंद पाण्डेय, आर्य समाज तलवण्डी के सूरज सिंह आर्य, वैदमित्र वैदिक एवं किशन आर्य तथा पंजाबी समाज समिति के अध्यक्ष दर्शन पिपलानी, सचिव सागर पिपलानी, शम्मी कपूर, दीप सेठी तथा गिरधर झाम्ब ने नयापुरा कोटा स्थित राजकीय उच्च मा० विद्यालय सिविल लाइंस पहुंचकर राहत सामग्री बांटी।

राहत सामग्री वितरण के इस अवसर पर बाढ़ प्रभावित महिलाओं को साड़ियां, लेडीज सूट, लड़के-लड़कियों एवं बच्चों को कपड़े, महिलाओं एवं बच्चों को चप्पलें, बीमारजनों को कंबल, बिस्किट एवं अन्य खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। - *अर्जुनदेव चड्ढा*

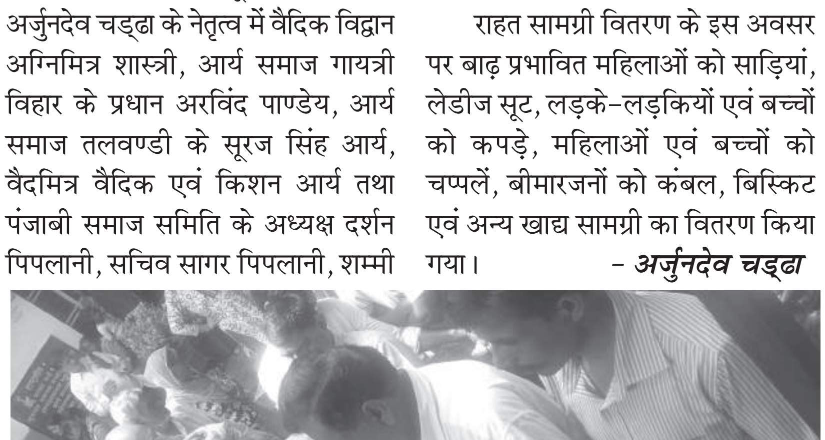

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26-27 सितम्बर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 सितम्बर, 2019

महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक आवासीय प्रशिक्षण शिविर का तीसरा चरण

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव आर्य समाज के उत्थान और विस्तार के लिए प्रयास रत रहने वाली संस्था है। वर्तमान में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पूरे देश के कोने-कोने में और विदेशों में भी समस्त आर्य जगत को महसूस हो रही है। चारों तरफ देश की भोली-भाली जनता धर्म के नाम पर डर और प्रलोभन का शिकार होकर दु:ख, पीड़ा और संताप का ग्रास बन रही है। इस झूठे ढ़ोंग पाखंड़ और गुरुडम के खिलाफ आर्य समाज सदैव अपनी बुलंद आवाज करता रहा है। आधुनिक परिवेश में केवल वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं का आर्यसमाजों की परिधि में वर्णन करने से कार्य चलने वाला नहीं है, क्योंकि संपूर्ण विश्व में अनेक अन्य संस्थाएं, संगठन अपने अपने मत और संप्रदायों के प्रचार प्रसार में पूरी तकनीकि सुविधाओं के साथ रात दिन लगे हुए हैं। इसलिए आर्य समाज को भी अपनी पूरी शक्ति के साथ वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का विस्तार और प्रचार करना ही होगा। इसी भावना और कामना को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प की योजना का निर्माण किया।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की शिक्षा देते हुए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारकों को प्रचार कार्य क्षेत्र में उतारने से पूर्व 60 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के प्रांगण में आयोजित किया गया है। इस शिविर का प्रथम चरण 2 सितंबर से 8 सितंबर 2019 तक आवासीय शिविर, इसके बाद 11 सितंबर से दूसरे चरण में स्वाध्याय शिविर में प्रशिक्षुओं ने स्वयं जो प्रथम शिविर में गुरुजनों द्वारा पढाया गया था, उसका नियमित स्वाध्याय किया और अब तीसरे चरण में पुन: 23 सितंबर से आवासीय शिविर आरंभ हो गया है। जिसमें सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी और अनेक अन्य महानुभाव निरंतर प्रशिक्षुओं को आर्ष ग्रंथों का ज्ञान देकर वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को गहराई से समझाने का रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। इस आवासीय शिविर में प्रशिक्षुओं की संपूर्ण दिनचर्या गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के अनुसार चलती है। जिसमें प्रात: 4 बजे से रात्रि 10 बजे शयन तक शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक स्तर पर प्रशिक्षु स्वयं को मजबूत बना रहे हैं।

सभा द्वारा उपयोगी मोबाइल एप्प आज ही डाउनलोड करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह